ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292 PP. NO.- 329-330
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

सतत् विकास एवं पर्यावरण संरक्षण

रेनू पाण्डेय

असिस्टेन्ट प्रोफेसर– (बी0एड्0 विभाग) ज्योत्सना बी0एड्0 कॉलेज ऑफ एजूकेशन, सीधी (म0प्र0), भारत

Received- 21.07.2020, Revised- 24.07.2020, Accepted - 25.07.2020 E-mail: deepkumary37@gmail.com

सारांश : ***पर्यावरण और विकास के बीच अटूट सम्बन्ध है। संसाधनों के कम होने पर विकास जारी नहीं रह सकता। विकास के समय पर्यावरण की उपेक्षा की जाए तो पर्यावरण का संरक्षण नहीं हो सकता है। विश्व पर्यावरण और विकास आयोग ने सतत् विकास की इन शब्दों में परिभाषा दी है–यह परिवर्तन की ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें संसाधनों का दोहन, निवेश की दिशा के मध्य तालमेल हो और जिससे मानवीय आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को पूरा करने की वर्तमान और भावी क्षमताओं में वृद्धि हो। सतत् विकास की अवधारणा से पर्यावरण नीतियों और विकास कार्यक्रमों की ऐसी रूपरेखा स्पष्ट होती है जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर की परिस्थितियों को ध्यान में रखा गया हो। विकास की प्रक्रिया में उन प्राकृतिक प्रणालियों को खतरे में नहीं डालना चाहिए जिनसे इस पृथ्वी का जीवन बना हुआ है। आज की औद्योगिक दुनिया में कुछ लोग अस्थायी मानसिकता में जीते हैं। उनका दृष्टिकोण मनुष्य केन्द्रित होने से उनके बुनियादी विचारों में ये होती है।***

कुंजीभूत शब्द– पर्यावरण, विकास, संसाधनों, संरक्षण, विश्व पर्यावरण, विकास आयोग, परिभाषा, परिवर्तन ।

1. मानव प्रकृति से अलग है।

2. विश्व में संसाधनों की असीमित आपूर्ति है जो सदैव बनी रहेगी।

3. प्रकृति पर विजय प्राप्त हो सकती है। प्रकृति के प्रति इस दृष्टिकोण के कारण प्रौद्योगिकी के विकास से पृथ्वी के संसाधनों के उपयोग की क्षमता बढ़ी है। परन्तु पर्यावरण से होने वाला नुकसान भी बढ़ा है। अब शिक्षित, सभ्य समाज को अनुभूति होने लगी है कि विश्व में घटकों को हानि होगी। सतत् विकास की अवधारणा हमें संसाधनों के उपभोग की नई नीति का रास्ता दिखाती है। इस नीति की मुख्य बातें हैं–

1. संसाधन उपभोग में कमी करना।
2. संसाधनों का दोबारा इस्तेमाल।
3. गैर नवीकरणीय संसाधनों की अपेक्षा सौर ऊर्जा जैसे नवीकरणीय संसाधनों का उपयोग।

सतत् विकास स्थिरता के तीन स्तम्भों पर टिका हुआ है–आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक। यह तीन चीजें इसकी आधारशिला हैं। पर्यावरणीय स्थिरता का तात्पर्य वायु, जल और जलवायु से है। सतत् विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू उन गतिविधियों या उपायों को भी अपनाना है जो स्थायी पर्यावरणीय संसाधनों में मदद कर सके, जिसमें न केवल हम अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे बल्कि आने वाली पीढ़ियों की भी आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित कर सकेंगे।

सतत् विकास की अवधारणा 1987 में बनी ब्रुतलैण्ड कमीशन से ली गई है इस वाक्यांश के अनुसार, सतत् विकास वह विकास है, जिसके अन्तर्गत वर्तमान की पीढ़ी अपनी जरूरतों को पूरा करे लेकिन इसके साथ ही संसाधनों की पर्याप्त मात्रा में सुरक्षा सुनिश्चित करे। जिससे आने वाले समय में भविष्य की पीढ़ी के माँगों को भी पूरा किया जा सके।

वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण से जुड़ी कुछ मुख्य समस्याएं हैं। ग्लोबल का तात्पर्य पृथ्वी में हो रहे स्थायी जलवायु परिवर्तन, औद्योगिक प्रदूषण पृथ्वी पर बढ़ रहे पर्यावरण प्रदूषण, ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन और ओजोन परत में हो रहे उर्त्सजन क्षरण आदि कारणों से पृथ्वी के तापमान में होने वाली वृद्धि की समस्या से है। वैज्ञानिकों ने भी इस तथ्य को प्रमाणित किया है कि पृथ्वी के तापमान में होने वाली वृद्धि की समस्या से है। वैज्ञानिकों ने भी यह भी प्रमाणित किया है कि पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है और इसे रोकने के लिये यदि आवश्यक कदम नहीं उठाये गये तो यह समस्या और भी ज्यादा गम्भीर हो जायेगी, जिसके नकारात्मक प्रभाव हमारे पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर होंगे।

प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से हो रहा दोहन एक प्रमुख चिन्ता का विषय बन गया है। जनसंख्या ज्यादा होने के कारण पृथ्वी पर प्राकृतिक संसाधनों का पुर्नभण्डारण होने के पहले ही उनका खपत हो जा रहा है। कृषि उत्पादों के उत्पादन की कम दर तथा प्राकृतिक संसाधनों में होती कमी के कारण उत्पन्न हो रही है। अगर ऐसा ही रहा तो

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

आने वाले समय में जल्द ही धरती की जनसंख्या न केवल भोजन की कमी का सामना करेगी बल्कि किसी भी विकास प्रक्रिया को पूरा करने के लिये संसाधनों की कमी से भी जूझना होगा।

निष्कर्ष– सतत् विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये यह काफी जरूरी है कि हम पर्यावरण की सुरक्षा के लिये आवश्यक कदम उठाये। इस तरीके से यह सिर्फ न वर्तमान के जनसंख्या के लिये लाभकारी होगा, बल्कि आनेवाली पीढ़ियाँ भी इसका लाभ ले सकेंगी और यही सतत् विकास का मुख्य लक्ष्य है। इसलिये सतत् विकास पर्यावरण की रक्षा के लिये काफी अहम् है।

सतत् विकास को सिर्फ पर्यावरण का संरक्षण करके ही प्राप्त किया जा सकता है। इससे न सिर्फ हमारे पर्यावरण को होने वाले नुकसान में कमी आयेगी, बल्कि यह हमारे आने वाली भविश्य की पीढ़ियों के लिये प्राकृतिक संसाधनों उपलब्धता को सुनिश्चित करेगा ।

*****